بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 08.08.25

मक्का पर विजयी युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (ज़हूर तिथि 8, 1404 हश)08 अगस्त 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जलसे से पहले फ़तह मक्का का वर्णन चल रहा था, मैंने कुछ इस्लाम के कट्टर विरोधियों का वर्णन किया था जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया था, उनमें से अभी कुछ लोगों का वर्णन शेष है।

वहशी बिन हरब ने ओहद की लड़ाई में हज़रत हमज़ा ؓ को शहीद किया था और मक्का पर विजय पाने के बाद यह ताएॅफ़ भाग गया, जब ताएॅफ़ के लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया तो यह भी आया और इसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। आप स. इसके इस्लाम क़ुबूल करने पर फ़रमाया कि क्या तुम्हारे लिए यह सम्भव है कि तुम मुझसे अपना चेहरा छिपा कर रखो। फिर जब रसूलुल्लाह ﷺ के निधन के पश्चात मुसैलमा नबुव्वत के झूठे दावेदार ने विद्रोह किया तो वहशी ने इस विचार से मुसैलमा के विरुद्ध लड़ाई में भाग लिया ताकि हज़रत हमज़ा ؓ की हत्या का कलंक धोया जा सके। इस युद्ध में वहशी ने अपनी बरछी से वार करके मुसैलमा की हत्या कर दी।

इसी प्रकार अमरू बिन हाशिम की सेविका सारा भी थी जो एक गायिका थी। मक्का पर विजय प्राप्ति से पहले ही उसने रसूलुल्लाह ﷺ से सहायता माँगी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा कि तुम्हारे

गीतों का क्या हुआ? इस पर उसने कहा कि बदर के युद्ध में क़ुरैश के सरदारों की हत्या के बाद मक्का वालों ने गीत सुनना बंद कर दिए हैं। इस पर आँहज़रत ﷺ ने उसे एक ऊँट अनाज से लदा हुआ प्रदान किया। किन्तु यह इस्लाम के विरुद्ध हास परिहास वाले गीत गाने से नहीं रुकी। यह वही युवती थी जिसके पास से हज़रत हातिब रज़ी. का पत्र मिला था, इसने इस्लाम क़ुबूल किया और हज़रत उमर रज़ी. की ख़िलाफ़त तक जीवित रही।

इसी प्रकार एक महिला इब्ने ख़तल की सेविका फ़रतना नामक थी, यह भी आप स. के बारे में व्यंगात्मक कविताएँ गाती थी, इसने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

हारिस बिन हिश्शाम मक्के का प्रसिद्ध एवं परिचित रईस था, अबू जहल के बाप के रिश्ते से भाई होता था, हज़रत ख़ालिद रज़ी. की बहिन इसकी पत्नी थी। फ़तह मक्का के अवसर पर यह और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीअः हज़रत उम्मे हानी रज़ी. के घर में दाख़िल हो गए। हज़रत उम्मे हानी रज़ी. ने रसूलुल्लाह ﷺ से निवेदन किया कि इन्हें मैंने शरण दी है। आप स. ने फ़रमाया- जिसे तुमने शरण दी, उसे हमने शरण दी। कुछ दिनों के पश्चात ये रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में उपस्थित हुए और कलिमाए शहादत पढ़ा। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया- सारी प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं, हारिस! तुम जैसा इंसान कैसे इस्लाम से दूर रह सकता था। हारिस ने उत्तर दिया- बख़ुदा! इस्लाम से दूर रहना सम्भव नहीं था।

इसी प्रकार सुहैल बिन अमरू के इस्लाम क़ुबूल करने की घटना है। यह हुदैबिया की सन्धि करने के लिए क़ुरैश की ओर से आया भी था। वे ख़ुद कहते हैं कि जब मक्का पर विजय पाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने अधिकार प्राप्त कर लिया तो मैंने भी ख़ुद को घर में बंद कर लिया और अपने बेटे को मुहम्मद (ﷺ) के पास भेजा ताकि वह मेरे लिए शरण की प्रार्थना करे। आँहुज़ूर ﷺ ने उन्हें भी शरण दी और फ़रमाया कि सुहैल जैसा योग्य एवं बुद्धिमान व्यक्ति अधिक देर तक इस्लाम से दूर नहीं रह सकता। जब सुहैल को पता चला तो उन्होंने कहा कि मुहम्मद (ﷺ) बचपन में भी उपकारी थे तथा इस आयु में भी हैं। हुनैन के युद्ध में ये मुशरिक होने की अवस्था में सम्मिलित हुए और हुनैन की लड़ाई से वापसी पर इन्होने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। लिखा है कि मक्का पर विजय के समय क़ुरैश के सरदारों में से इस्लाम स्वीकार करने वाले सरदारों में सबसे अधिक नमाज़ रोज़े के पाबन्द और सदक़ा देने में सुहैल से बढ़ कर और कोई न था, प्रायः विनयपूर्ण प्रार्थनाएँ करने वाले थे, क़ुरआन पढ़ते समय प्रायः रोया करते थे।

सुहैल बिन अमरू का एक और कारनामा बयान किया जाता है- कहते हैं सुहैल क़ुरैश के ज़ोरदार वक्ता भी थे। ये बदर की लड़ाई में काफ़िर होने की अवस्था में मुसलमानों के बन्दी बने। इन्होने अपने होंठों पर निशान बना रखा था। हज़रत उमर रज़ी. ने इस अवसर पर रसूलुल्लाह ﷺ से निवेदन पूर्वक कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ! इसके सामने के दो दांत निकलवा दें, जहाँ इसने निशान बनाए हुए हैं। यह आप स. के विरूद्ध कभी भी भाषण देने के लिए खड़ा नहीं हो सकेगा। इसके दांत निकाल दें, मुंह में दांत नहीं होंगे तो बोला नहीं जाएगा ठीक तरह। आप स. ने फ़रमाया- ऐ उमर! इसे छोड़ दो, सम्भव है कि यह ऐसे स्तर पर पहुँच जाए कि तुम इसकी प्रशंसा करो। हज़रत उमर रज़ी. तो उसको दंड दिलवाना चाहते थे परन्तु आँहज़रत ﷺ ने कहा कि नहीं, कुछ नहीं कहना,

एक अवसर आएगा जब यह उस स्तर पर होगा और ऐसी बातें करेगा कि तुम इसकी प्रशंसा करोगे। अतएव ये कहते हैं कि यह अवसर उस समय आया जब रसूलुल्लाह ﷺ का निधन हुआ तो मक्का के लोग इस्लाम से पलटने लगे, जब क़ुरैश ने मक्का वालों को विमुख होते देखा और हज़रत अताब बिन उसैद उमवी रज़ी. जो कि नबी करीम ﷺ की अनुमति से मक्का वालों पर अमीर नियुक्त थे, वे छिप गए, ऐसी विकट परिस्थिति हो गई तो उस समय हज़रत सुहैल बिन अमरू रज़ी. सम्बोधन करते हुए खड़े हुए और कहा- ऐ क़ुरैश के गिरोह, तुम अन्त में इस्लाम में आए हो, अन्त में इस्लाम लाकर सबसे पहले पलट जाने वाले न बनना। ख़ुदा कि क़सम यह दीन इसी तरह फैलेगा जिस तरह कि चाँद और सूरज निकलने से छिप जाने तक फैलते हैं। इस तरह आपने अर्थात सुहैल रज़ी. ने एक विवेक पूर्ण सम्बोधन किया तथा इस भाषण ने मक्का वालों के दिलों पर प्रभाव डाला और वे रुक गए। हज़रत अताब बिन उसैद रज़ी. जो छिप गए थे, वे भी बुलाए गए तथा क़ुरैश इस्लाम पर दृढ़ता पूर्वक जम गए।

फिर हज़रत उतबा तथा मअतब का इस्लाम क़ुबूल करना है, इसके बारे में लिखा है कि हज़रत अब्बास रज़ी. से रिवायत है कि जब फ़तह मक्का के दिन आँहज़रत ﷺ ने अबू लहब के बेटे उतबा और मअतब के विषय में पूछा, मैंने कहा कि वे अन्य मुशरिकों की तरह एक ओर छिप गए हैं। आप स. के कहने पर हज़रत अब्बास रज़ी. उन्हें ले आए। आप स. ने उन्हें इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी तो उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और दोनों ने बैअत कर ली, फिर आप स. खड़े हुए, उनके हाथ पकड़े और उन्हें मुन्तज़िम के स्थान पर ले आए जो हिजरे अस्वद तथा कअबे के द्वार के बीच में बैतुल्लाह की दीवार का भाग है, जिससे लिपट कर दुआ माँगना मसनून है, और यह दुआ की क़ुबूलियत का विशेष स्थान है, और कुछ देर दुआ माँगी, फिर वापस तशरीफ़ ले आए, ख़ुशी आप स. के चेहरे पर देखी जा सकती थी। हज़रत अब्बास रज़ी. ने कहा-या रसूलुल्लाह ﷺ! अल्लाह आपको ख़ुश रखे, मैं आप स. के चेहरे पर ख़ुशी के चिन्ह देख रहा हूँ। आप स. ने फ़रमाया- मैंने अपने चचा के दो बेटों को अपने रब से माँगा था, तो उसने मुझे ये प्रदान कर दिए।

फिर सफ़वान बिन उमय्या का क़ुबूले इस्लाम है। सफ़वान बिन उमय्या मक्का के रईस उमय्या बिन ख़लफ़ का बेटा था। बदर के युद्ध के बाद उसने नबी करीम ﷺ की हत्या करने का षड्यंत्र भी रचा था। मक्का पर विजय के अवसर पर हज़रत उमैर बिन वहब रज़ी. ने आँहज़रत ﷺ की सेवा में इसके लिए शरण दिए जाने की प्रार्थना की, जिसे आप स. ने स्वीकार कर लिया। सफ़वान, रसूलुल्लाह ﷺ के सामने उपस्थित हुआ और कहा कि मैं अभी इस्लाम क़ुबूल करना नहीं चाहता, और मोहलत माँगी। जब आप स. ताएँफ़ एवं हुनैन के युद्धों के बाद माले ग़नीमत (युद्ध में विजय से प्राप्त धन सम्पत्ति) बांटी तो सफ़वान उस घाटी को जो भेड़ बकरियों से भरी हुई थी, चकित होकर देख रहे थे। आप स. ने उसकी अवस्था देख कर फ़रमाया कि यह घाटी तथा इसमें जो कुछ है सब तुम्हारा है, ले जाओ इसे। सफ़वान ने उनकी सारी धन सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले लिया और कहा कि जिस उत्तम स्तर पर नबी की चेतना दान करती है, इस प्रकार कोई भी नहीं कर सकता और उसी समय इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- फ़तह मक्का के अवसर पर इस्लाम क़ुबूल करने वाले इन मक्के के

सरदारों में से अधिकाँश ने बाद में अपने जीवन में एक अत्यधिक रूहानी क्रान्ति पैदा की थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इसका वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ी. एक बार अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में मक्का पधारे तो नगर के बड़े बड़े सरदार इस विचार से कि हम फिर अपने खोए हुए सम्मान को प्राप्त कर सकें, आप रज़ी. से मिलने के लिए आए। अभी वे बातें कर ही रहे थे कि मजलिस में एक के बाद एक पहले ईमान लाने वाले गुलाम आते चले गए, जब ये पुराने ईमान लाने वाले आते तो आप रज़ी. इन सरदारों को कहते कि तनिक पीछे हट जाओ, इनको आगे बैठने दो। यहाँ तक कि पीछे हटते हटते इन सरदारों को जूतियों में बैठना पड़ा, वे इस बात को सहन न कर सके और उठ कर बाहर चले गए। बाहर निकल कर वे एक दूसरे से शिकायत करने लगे कि देखो आज हमारा कैसा घोर अपमान हुआ है। इस पर उनमें से एक युवा बोला कि इसमें हज़रत उमर रज़ी. का तो कोई दोष नहीं, यह हमारे बाप दादा का दोष था जिसका आज हमें दंड मिला है। उसकी यह बात सुनकर दूसरे कहने लगे कि क्या इस अपमान के कलंक को दूर करने का कोई साधन भी है? इस पर सब ने आपस में विचार विमर्श किया और हज़रत उमर रज़ी. के पास आए। जब उन्होंने यह बात कही तो हज़रत उमर रज़ी. दुःख के प्रभाव के कारण बोल भी न सके, केवल आप रज़ी. ने हाथ उठाया और उत्तर दिशा की ओर उंगली से संकेत किया, जिसका मतलब यह था कि उत्तर में अर्थात शाम देश में कुछ इस्लामी युद्ध हो रहे हैं, यदि तुम उन युद्धों में शामिल हो जाओ तो सम्भव है कि कुछ पश्चाताप हो जाए। अतः वे वहाँ से उठे तथा शीघ्र ही उन लड़ाईयों में शामिल होने के लिए चल पड़े। इतिहास कहता है कि वे धनवान जितने भी थे उनमें से एक व्यक्ति भी जीवित नहीं लौटा, सब शहीद हो गए और इस प्रकार उन्होंने अपने कुटुम्बों के नाम पर से अपमान के कलंक को मिटा दिया।

मक्का पर विजय के तुरंत बाद हुज़ूरे अकरम ﷺ ने काफ़िरों के बुतों के स्थानों को ध्वस्त करने के निर्देश दिए ताकि लोगों के दिलों से इन बुतों का काल्पनिक भय मिटाया जा सके।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- कुछ थोड़े से वृत्तांत जो हैं, इंशाल्लाह आगे बयान करूंगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों मुकर्रम चौधरी अब्दुल ग़फ़ूर साहब सुपुत्र श्री चौधरी गुलाम क़ादिर साहब, जाम शोरो, हैदराबाद और मुकर्रम मुहम्मद अली साहब करतारपुर फैसलाबाद का सदवर्णन फ़रमाया और मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की और जनाज़े की नमाज़ें ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब